IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन"

Dr. Ashok Kumar, Assistant Professor, Vivekananda College of Education, Johlaka Sohna, Gurugram

शोध सार

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में "किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन" किया गया है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना "किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है" का निर्माण किया । शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन तथा प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया एवं तनाव का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. के मंगल और डॉ. शुभ्रा मंगल के परीक्षण का प्रयोग किया । निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के बीच अल्पकोटी का धनात्मक सहसम्बन्ध है।

मुख्य शब्दावली: किशोरावस्था, संवेगिक बुद्धि,, शैक्षिक उपलब्धि, सहसम्बन्ध

प्रस्तावना

किशोर विद्यार्थी अपने भविष्य को लेकर अत्यन्त उत्साहित एवं चिंतित प्रतीत होते हैं एवं संवेगात्मक असन्तुलन की अवस्था से गुजर रहे होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों के समस्या सामाधान करने एवं सही दिशा का चयन करने हेतु निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता है।

सांवेगिक बुद्धि–

सांवेगिक बुद्धि (Emotional Intelligence, EI) आधुनिक तंत्रिका विज्ञान में प्रचलित दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें संवेगों को तर्कसंगत सोच में बाधाओं या व्यवधानों के बजाय इन्हें हमारे परिवेश के बारे में उपयोगी विवरणों के स्रोत के रूप में संरचित किया जाता है। संवेगों का बुद्धिपूर्ण उपयोग ऐसी दुनिया में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान कर सकता है जहां तकनीकी ज्ञान और "किताबी ज्ञान" की तो बहुतायत है, परंतु अनिश्चितता, कुंठा, द्वंद और पारस्परिक संबंधों से जूझने की योग्यता दुर्लभ है। अस्थिर (volatile), अनिश्चित (uncertain), जटिल (complex) और अस्पष्ट (mbiguou) (VUCA) सामाजिक वास्तविकता में, व्यक्ति के अपने स्वयं और दूसरों के संवेगों से अनुकूलता बिठाने, जीवन के उपक्रमों से गुजरने के लिए अद्वितीय तरह के संसाधनों का लाभ उठाने में हमारी मदद कर सकता है। जबकि हम में से कई, सामान्य या संज्ञानात्मक बुद्धि से पहले ही परिचित होंगे चूंकि शैक्षणिक और पेशेवर संदर्भों में बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient, IQ) पर काफी बल दिया जाता है, सांवेगिक बुद्धि अपेक्षाकृत नया संप्रत्यय है जिसका विकास और शोध अभी भी जारी है।

संवेगिक बुद्धि प्रत्यय को लोकप्रिय बनाने का श्रेय एक मात्र अमेरिकन मनोवैज्ञानिक ''डेनियल गौलमैन'' को जाता है।

संवेगिक बुद्धि प्रत्यय का विकास सन् 1990 ई. में दो अमेरिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. जॉन मेयर तथा डॉ. पीटर सेलावे ने किया था। उन्होंने इसे सामाजिक बुद्धि के रूप में परिभाषित किया।

संवेगिक बुद्धि प्रत्यय को एक ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिससे चार विभिन्न रूपों में संवेगों को उचित दिशा देने में मदद मिले। जैसे – संवेग विशेष का प्रत्यक्षी करण करना, उसका अपनी विचार प्रक्रिया में समन्वय करना, संवेग को समझना और उसका प्रबन्धन करना। सांवेगिक बुद्धि शब्द को दो संप्रत्ययों– संवेगों और बुद्धि में विभाजित किया जा सकता है। यदि किसी से सामान्य शब्दों में संवेगों के बारे में पूछा जाए, तो पहली प्रतिक्रियाओं में संवेगों के प्रति उसका दृष्टिकोण स्वभावतः प्रतिबंधक (restrictive) होने की संभावना है। संवेगों को आमतौर पर कमजोरी, उद्विग्नता और समुचित निर्णय और निर्णय प्रक्रिया की बाधा के रूप में देखा जाता है जो हमें अक्षम बनाते हैं। सांवेगिक बुद्धि शब्द को यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो इसमें निहित दोनों शब्दों को एक–दूसरे के विपरीतार्थक के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि, आधुनिक तंत्रिका विज्ञान ने इन मिथकों को खत्म करने का काम किया है और ऐसे कई महत्वपूण प्रकार्यों को रेखांकित किया है जो संवेगों द्वारा संपन्न होते हैं। अब हम जानते हैं कि संवेग हमारी दुनिया के बारे में महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया और जानकारी प्रदान करते हैं, रचनात्मकता स्फूर्त करते हैं, निर्णय प्रक्रिया में मदद करते हैं, तर्क–वितर्क क्षमता बढाते हैं और विश्वास एवं संयोजन मजबूत करते हैं– यह सभी महत्वपूर्ण हैं यदि हमारा उद्देश्य सिर्फ काम करना नहीं बल्कि एक व्यक्ति के रूप में फलना–फूलना हो।

परिभाषाएँ

डॉ.दलजीत सिंह – संवेगिक बुद्धि व्यक्ति की योग्यता है जिससे वह अपने भीतर स्वः एवं नजदीकी वातावरण द्वारा उत्पन्न हुई कई प्रकार के संवेगात्मक उत्तेजकों से सही एवं सफल अनुक्रिया कर सकता है।

मोरिस टूलियस – संवेगिक बुद्धि मानवों को पूर्ण करने के विचार से केन्द्रित करने में सहायता करती है।

डेनियल गोलमैन – संवेगिक बुद्धि अपने संवेगों को जानने एवं देखभाल करने तथा दूसरो में इनकी पहचान करने और अपने संबधों के कायम रखने में है।

सांवेगिक बुद्धि के घटक–

- Perceiving emotions
- Understanding emotions
- Managing emotions
- Using emotions

सांवेगिक बुद्धि प्रत्यय को निम्न तीन मुख्य भागों में समझा जा सकता है–

1. **संवेगात्मक बोध–** संवेगात्मक बोध अपने स्वयं के दूसरों के संवेगों को सही ढंग से पहिचानने तथा उनके बारे में निर्णय करने की योग्यता है। एक प्रकार से यह ईमानदारी तथा बेईमानी के संवेगों की अभिव्यक्ति के मध्य विभेदीकरण करने की योग्यता है।

2. **संवेगात्मक व्यवस्था** – संवेगात्मक व्यवस्था अपने स्वयं के तथा दूसों के संवेगों को नियन्त्रित करके दिशा निर्देश करने की योग्यता है। इससे तात्पर्य सकारात्मक संवेगों और अनुकूलन पर प्रभाव डालने वाले हानिकारक प्रभावों को हटाने तथा सकारात्मक संवेगों को प्रतिपादित करने से है।

3. **संवेगात्मक ज्ञान** – संवेगात्मक ज्ञान संवेगों को समझना और सूचनाओं को उपयोग में लाना है। इसमें संवेगों के प्रयोग एवं समायोजन पक्ष की ओर ध्यान रखते है। साथ ही अपने लक्ष्य के संबंध में लचीला दृश्य स्वरूप तथा अभिप्रेरणा का प्रतिपादन करना और प्रकाशित करना है।

अर्थात् सांवेगिक बुद्धि संवेगों को अनुभव करने उपयोग करने, संप्रेषित करने, प्रबन्ध करने तथा समझने की जन्मजात क्षमता है। जिसे उचित वातावरण मार्गदर्शन एवं व्यवहार द्वारा विकसित किया जाता हैं। आधुनिक प्रतिस्पर्धात्मक युग में किशोरों के समक्ष अनेक समस्याएँ है। जिन पर प्रतिदिन शोध कार्य किए जा रहे है। किशोर अवस्था को तूफान तथा संघर्ष का काल कहा जाता है। तथा इस अवस्था में छात्र अक्सर परेशान रहते है। माता–पिता भी अपने बच्चों पर लागातार दबाव बनाते है। तथा बच्चा भी परीक्षा में अव्वल आने का हर सम्भव प्रयास करता है। तथा यह सारा दबाव कुल मिलाकर बच्चों के ऊपर पड़ता है। जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता हैं। कई बार बच्चे तनाव में आकर आत्महत्या कर लेते है या अवसाद से ग्रसित हो जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि हमें इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के शोध की आवश्यकता हैं।

समस्या कथन

"किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन" ।

शोध का उद्देश्य

किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

किशोरों की संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दिल्ली के राजकीय एवं निजी विद्यालयों को चयनित किया गया है। जिसमें से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

शोधकर्ता ने विद्यार्थियों की संवेगिक बुद्धि का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. के मंगल और डॉ. शुभ्रा मंगल के परीक्षण का प्रयोग किया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता द्वारा यह उद्देश्य निर्धारित किया गया कि ''किशोरों के संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन। करना।'' इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना बनायी गई कि किशोरों के संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं। जिसके विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सारणी तैयार हुई–

सारणी. 01

चर	N	Mean	सह–सम्बन्ध
संवेगिक बुद्धि	80	60.55	0.050
शैक्षिक उपलब्धि	80	60.5	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किशोंरों में सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि सह सम्बन्ध r=0.050 सह सम्बन्ध गुणांक पाया गया। जो अल्पकोटी का धनात्मक सह सम्बन्ध है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि किशोंरों में सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध r=0.050 गुणांक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि किशोरों के संवेगिक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के बीच अल्पकोटी का धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सन्दर्भ

- Mangal S.K. (2008) Statistics in psychology and Education prentice, Hall of India private limited.
- Sharma R.A. (2008 Fundamentals of Educational psychology R. Lal Book Depot. (Meerut)
- Wikipedia the free encyclopedia.
- W.W.W. Webdunia.Com
- **Yadav Menu June 2014 No.10, Vol. 13.** Emotional Intelligence, creativity and their impact on Academic Achievement of senior secondary class student.
- **Reddy Lokananda G,** Anuradha vijaya R, feb-2013 vol. -12 No.6 Emotional intelligence, occupational stress and job performance of Heights secondary teachers.
- डॉ. भटनागर आर. पी., भटनागर मीनक्षी (2007)''शिक्षा अनुसंधान'' लायल बुक डिपों मेरठ
- डॉ. शर्मा. आर. ए. (2009) ''शिक्षा अनुसंधान'' आर. लाल बुक डिपों, मेरठ
- भगवान दास (2007) ''शिक्षा मनेविज्ञान'' ओमेगा पब्लिकेशन
- भटनागर सुरेश (2007) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- डॉ. शर्मा. आर. ए. (2011) शिक्षा अनुसाधान के मूल तत्व एंव शोध प्रक्रिया.
- डॉ वालिया जे. एस. (2011) अधिगम कर्ता, अधिगम एवं संज्ञान अह्म वाल पब्लिशर्ज (पजाब)
- डॉ. मंगल एस. के. मंगल उमा (2010) विद्यार्थी अधिगम एवं संज्ञान टंडन पब्लिकेशन (लुधियाना)